Journal of Advances in Science and Technology

Vol. 10, Issue No. 21, February-2016, ISSN 2230-9659

REVIEW ARTICLE

सौर ऊर्जा एवं उसका आर्थिक प्रभाव (भारत के विशेष संदर्भ में)

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances in Science and Technology
Vol. 10, Issue No. 21, February-2016, ISSN 2230-9659

सौर ऊर्जा एवं उसका आर्थिक प्रभाव (भारत के विषेष संदर्भ में)

Dr. Shashi Joshi

Assistant Professor, Department of Hindi, Govt. Madhav PG Science College, Ujjain

----------♦----------

भारत एक विकासषील देष है। यह देष अनेक दृष्टियों से विषिष्ट देष है। जनसंख्या की दृष्टि से विष्व में इसका दूसरा स्थान है। यहाँ विभिन्न प्रकार के संसाधन भी प्रचूर मात्रा में उपलब्ध हैं, लेकिन फिर भी इसे अमीर देषों की श्रेणी में नहीं रखा जाता। कहा भी जाता है कि – भारत एक धनी देष है, जिसके निवासी निर्धन हैं।

भारत को कृषि प्रधान देष भी कहा जाता है, जिसकी जनसंख्या का एक बड़ा भाग कृषि एवं संबंधित कार्यों में लगा हुआ है। अब इसकी अर्थव्यवस्था का हिस्सा कृषि से औद्योगिक क्षेत्र एवं सेवा क्षेत्र की ओर अग्रसर हो रहा है, जिसे आर्थिक विकास का एक सामान्य सूचक माना जाता है लेकिन इससे पर्यावरण पर दुष्प्रभाव भी पड़ रहे हैं।

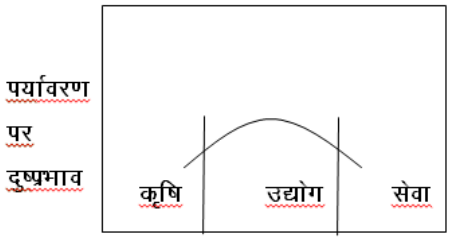

आर्थिक विकास का स्तर

बढ़ती हुयी जनसंख्या और आर्थिक विकास की प्रक्रिया ने भारत को एक बड़ा कार्बन उत्सर्जक देष बना दिया है। उत्पादन के लिए ऊर्जा की आवष्यकता होती है। विभिन्न वाणिज्यिक प्रयोगों जैसे कृषि, उद्योग, सिंचाई, परिवहन तथा गैर वाणिज्यिक प्रयोगों जैसे प्रकाष, घरेलु प्रयोग, व्यक्तिगत परिवहन आदि के लिए ऊर्जा की आवष्यकता होती है। उपभोक्ता वस्तु उद्योगों की क्षमता में विस्तार के कारण भी ऊर्जा का उपभोग बढ़ रहा है। विद्युतीकरण, सिंचाई, नलकूप आदि के व्यापक प्रयोग ने भी ऊर्जा की मांग को बढ़ाया है। बढ़ती हुयी जनसंख्या और दैनिक जीवन में आधुनिक यंत्रों के प्रयोग ने भी ऊर्जा की मांग में वृद्धि की है। ऊर्जा के साधनों के रूप में कोयला, पेट्रोलियम, गैस, अणु शक्ति प्रमुख है। कोयला ऊर्जा का परम्परागत साधन है। विभिन्न कारणों से भारत में ऊर्जा संकट है। जैसे तेल का बढ़ता हुआ प्रयोग, विद्युत उत्पादन के लक्ष्यों को प्राप्त न कर पाना, अणुषक्ति के विकास की धीमी गति आदि। इस ऊर्जा संकट का हल सौर ऊर्जा का उपयोग कर किया जा सकता है। भारत में विषिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण वर्ष के अधिकांष समय में काफी बड़े क्षेत्र में सौर किरणें उपलब्ध रहती हैं। इस ऊर्जा का प्रयोग बार–बार किया जा सकता है और इससे प्रदूषण भी नहीं होता। इससे खाना पकाना, पानी गर्म करना, वायु मण्डल गर्म बनाना, फसल सुखाना आदि कार्य किए जा सकते हैं।

भारत के संदर्भ में बड़ी जनसंख्या की ऊर्जा की आवष्यकता की पूर्ति करना आसान नहीं है। भारत में विष्व की 17 प्रतिषत जनसंख्या निवास करती है लेकिन उसका ऊर्जा उपभोग मात्र 3 प्रतिषत है। ऊर्जा के उपभोग की दृष्टि से भारत का स्थान विष्व औसत से भी नीचे है। वर्तमान समय में भारत में ऊर्जा की मांग लगातार बढ़ती जा रही है। ऊर्जा की मांग एवं पूर्ति के विषाल अंतर को पाटने के लिए भारत सरकार ने वर्तमान शक्ति क्षमता 209 जी.डब्ल्यु. को सन् 2017 तक बढ़ाकर 342 जी.डब्ल्यु. करने का लक्ष्य रखा है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने में सौर ऊर्जा की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी। इसी कड़ी में जनवरी 2010 में जवाहरलाल नेहरू नेषनल सोलर मिषन प्रारंभ किया गया।

ऊर्जा उत्पादन के आर्थिक प्रभाव को दृष्टिगत रखना भी महत्वपूर्ण है। सकल घरेलु उत्पाद ;ळतवे क्वउमेजपब च्तवकनबज वत ळक्च्द्ध ऊर्जा उत्पादन से संबंधित है। ऊर्जा उत्पादन की कम क्षमता ने भारत की ळक्च् पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। इसे निम्न तालिका में देखा जा सकता है।

स. क्र.	वर्ष	ळक्च् वृद्धि दर प्रतिषत
1	2011	6.5
2	2012	7.5
3	2013	8.2
4	2014	8.4
5	2015	8.5
6	2016	9.0
7	2017	8.5
8	2018	8.5
9	2019	8.5
10	2020	8.2

11	2021	7.7
12	2022	7.5

तालिका से स्पष्ट है कि आने वाले वर्षों में ळक्च् वृद्धि दर प्रतिषत में कमी हो सकती है। भारतीय अर्थव्यवस्था में सौर ऊर्जा पर विनियोग करना लाभदायक है। सौर ऊर्जा के उत्पादन में होने वाली वृद्धि तथा उसकी घटती हुयी लागत अर्थव्यवस्था पर दूरगामी परिणाम डालेगी। इसका प्रभाव विभिन्न उद्योगों पर पड़ेगा। इससे तेल, पेट्रोल प्राकृतिक गैस आदि की मांग घटेगी। भारत की तेल उत्पादक देषों पर निर्भरता भी घटेगी। तेल पर होने वाले बिल की राषि में कमी आयेगी। परिणामस्वरूप देष की अर्थव्यवस्था को लाभ पहुंचेगा। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए कार्बन उत्सर्जन को कम किया जाना आवष्यक है, लेकिन इससे देष के आर्थिक विकास पर दुष्प्रभाव पड़ सकता है। सौर ऊर्जा के उपयोग से कार्बन उत्सर्जन भी कम होगा तथा आर्थिक विकास पर भी विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा।

सौर ऊर्जा के उपयोग में वृद्धि न केवल अर्थव्यवस्था के लिए बल्कि व्यक्तिगत रूप से भी लाभदायक है। भारत सरकार सौर ऊर्जा के उत्पादन एवं उपयोग को पूर्ण समर्थन प्रदान कर रही है। सौर ऊर्जा के बढ़ते उत्पादन एवं उपयोग ने बाजार में सौर ऊर्जा उत्पादक कंपनियों में प्रतियोगिता को बढ़ावा दिया है। परिणामस्वरूप सौर ऊर्जा के उत्पादन की लागत एवं कीमत गिर रही है। इससे भी अर्थव्यवस्था को लाभ मिल रहा है।

निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में सौर ऊर्जा का महत्वपूर्ण स्थान है। इसका उत्पादन एवं उपयोग लगातार बढ़ रहा है। यह प्रदूषणरहित ऊर्जा संसाधन है। भारत के संदर्भ में सौर ऊर्जा के आर्थिक प्रभाव महत्वपूर्ण एवं दूरगामी हैं।

संदर्भ

1. Economics of Social Sector and Environment, Udai Prakash Sinha, Concept Publishing Co., New Delhi.

2. www.economicshelp.org

3. www.seci.gov.in

4. www.epw.in

5. www.censusindia.gov.in